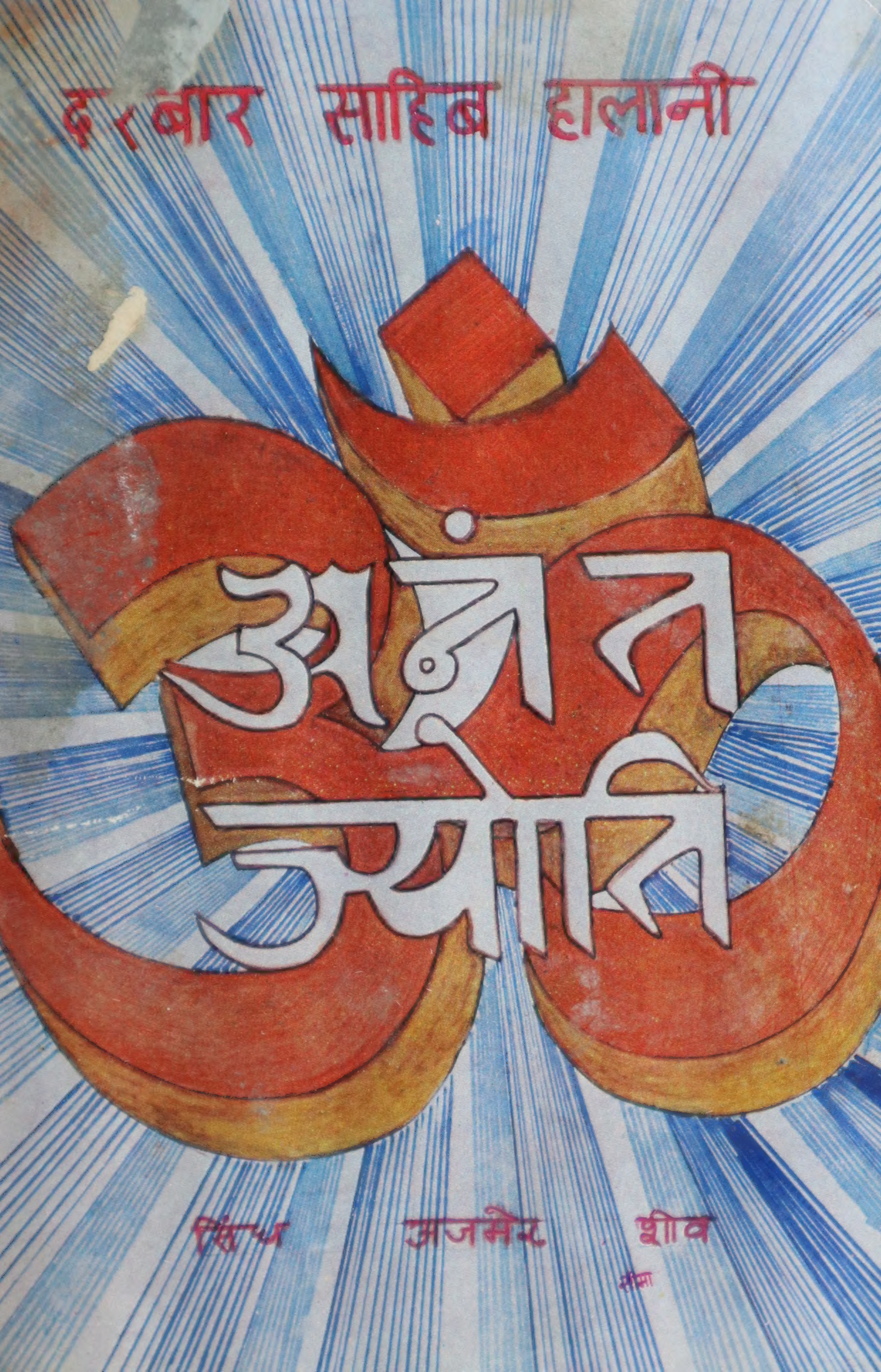
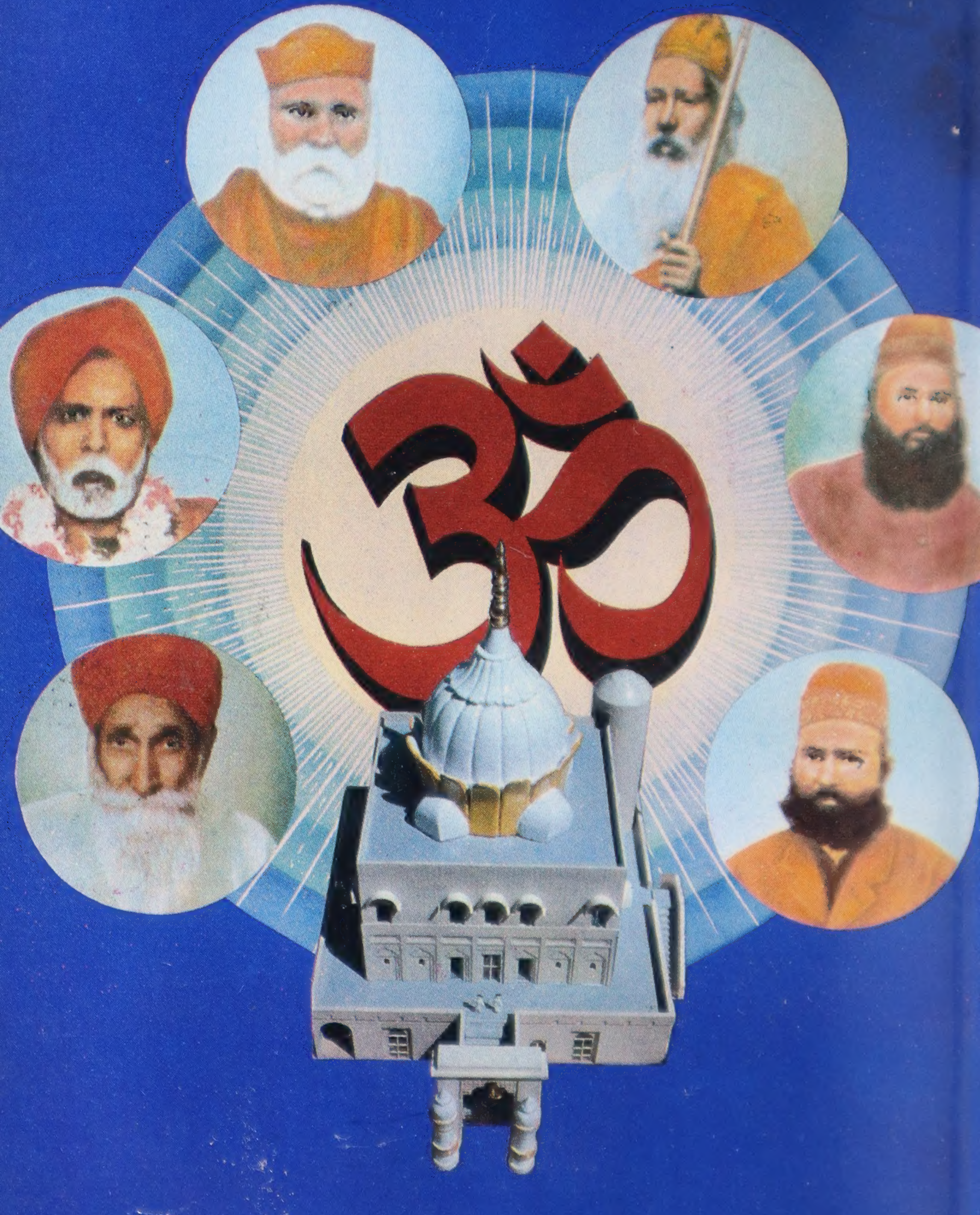

दरबार साहिब हालानी
अंत ज्योति
सिंध अजमेर शीव
सीमा



# अनन्त ज्योति

हालाणी दरबार साहिब

के

दो - सौवें स्थापना वर्ष

के उपलक्ष में

ज्योत से ज्योत जलाते आए
संत ये बेमिसाल
अज्ञान, अधर्म, अन्धकार मिटाकर
सबको किया निहाल
सेवा सिमरन सिद्ध कर गए
अमर यह दो सौ साल

प्रथम सम्पादन १८-८-१९८७    २५०० प्रतियाँ

मूल्य रु. ५

श्रीमती माया देवी अर्जुन प्रेमचन्दानी के
हार्दिक आभारी हैं, बाबाजी के सेविका का जिन्होंने सिन्धी लिपि से देवनागरी लिपि में लिखने का कष्ट किया ।

परम् पूज्यनीय साध साहिब, हालाणीं दरबार साहिब (अजमेर) की आज्ञा व परम् आशीर्वाद से यह पुस्तक 'सत् प्रचार प्रेस', इन्दौर के द्वारा प्रकाशित की गई है ।




स्वामी सुखदेव साहिब समाधि में हैं.
मीर अल्लाहयार खान सजदे में खड़े हैं।

# दरबार साहिब की स्थापना १७८७
## स्वामी सुखदेव साहिब

आज्ञा पाय के गुरुओं के,
    मुख से निकली यह वाणीं,
सुनो दुनिया वालों,
    इक दरबार साहिब की अमर कहानी,
कैसे स्थापन हुई थी,
    दरबार साहिब हालाणी ।।

जब चला गजनवी से,
    मीर अल्लाह यार खान माणकाणीं,
चलते गहरे जंगल से,
    देखा मीर ने इक फकीर शिरोमणि,
समाधि में थे वो,
    संत महान सुख देव स्वामी ।।

तेजस्वी महात्मा की,
    देख के चमकती हुई पेशानी,
रुक गए मीर साहब,
    न देखी थी कब ऐसी सूरत सुहानी
मगन हो गए मन ही मन में,
    पायके ऐसा दीदार रुहानी ।।

समाधी खुलते ही देखा,
    मीर साहिब ने नूर नूरानी,
सजदे में झुक गए
    करते इक विनती निमाणीं,
सिन्धु देश के राज की,
    मिली है इक हिस्सेदारी ।।
फ़ज़्ल होगा अल्लाह का,
    अगर रहेगी आपकी राज पर नज़रदारी
निवाज़िश है किबला कबूल फरमाएं
    इस बन्दे की अर्ज़दारी
सुपुर्द है आपके चरणों में
    यह दास की सारी हकदारी ।।

आशिक अल्लाही के चश्म तर में,
    देख के इतनी इन्तज़ारी,
और सिदिक खुदाई,
    स्वामी जी फरमाए कुरबान हैं हम आपके बस,
रहेंगे आपके साथ हर हाल में,
    चलेंगे हम भी परदेस,
सुना बहुत है,
    हरा भरा और अनन्त रमणींक है सिन्धु देश ।।

प्रेम वश स्वामी जी,
चल दिये मीर साहिब के साथ,
मंज़िल मंज़िल जंगल जंगल,
तय हो गए साथ साथ,
और आ पहुँचे,
दक्षिण सिंधु के शहर मीरपुर खास ।।
जहाँ बंध गया नया शहर टन्डो अल्लाह यार
स्थापित हो गया स्वामी जी का,
इक सुन्दर सा दरबार ।।

आ गए सिक्ख सेवक सेवा में,
छोड़ के घर परिवार,
सुखराम दास संतरीन और संत सरन ने
पाया था स्वामी जी का प्यार
कथा प्रवचन कीर्तन भजन,
और होने लगी आसादीवार,
गुरुओं की आज्ञा से,
यह रीति चलती रही हर वार ।।

प्रसन्न चित्त स्वामी जी बोले,
अस्थिर अमर है यह दरबार,
अब हम कर आते परिक्रम,

इस देस का इक बार ।
दरबार साहिब सुपुर्द करके,
भाई संत सरन के हाथ,
स्वामी जी लिये भाई सुखराम दास,
और संतरीन अपने साथ
करते भ्रमण और कीर्तन
आ पहुँचे शहर हैदराबाद ।
सेवण लकी तीर्थ से नौशहरो फैरोज़ और कंड्यारा
तय करते पहुँचे इक सुन्दर बन में
शहर हालाणीं के पास ।।

रमणीक स्थान और
घने झाड़ थे यहाँ आस पास ।
पशु पक्षी भी बोल रहे थे
मीठी मीठी बोलियाँ साथ साथ
अति सुन्दर अति सुन्दर
बोले स्वामी जी,
यही अपने रहने का है स्थान ।
सेवकों ने बटाया हाथ
और बन गया एक छोटा सा मकान ।
इस छोटी सी सुन्दर कुटिया की,
होगी इक दिन महिमा महान

शब्द स्वामी जी के निकले ऐसे,
जो बने इक फरमान,
भजन कीर्तन और सेवा में
जुट जाते थे आते जाते महमान।
मुश्किल न था कुछ,
सब लग रहा था कितना आसान,
जब इक दिन मीर अल्लाह यार के भ्राता
ख़ैरपुर के मीर साहिब सोहराब ख़ॉन
सैर शिकार शौक से,
आ पहुँचे इस रमणींक स्थान।
स्वामी जी के दीदार से,
अहसास हुआ अजीब,
और बढ़ गया ईमान,
यह जान के, कि स्वामी जी को साथ लाए थे,
मीर साहिब अल्लाह यार ख़ॉन ।
सजदे में झुक के अर्ज़ किया,
होगा इस बन्दे पर अहसान
तुच्छ भेंट कबूल फरमाय के,
बढ़ा दीजिये इस इलाके की शान ।।

स्वामी जी प्रसन्न चित्त मुस्काये,
देख के मीर साहब का प्रेम

हम भाई क्या है ?
"ऐसे प्रेम के तो बस में,
  है खुद भगवान"
पा ली है आपने रहमत अल्लाहताला की
  करके ऐसा उत्तम दान
सवा तीस एकड़ ज़मीन,
  स्वीकार करके,
स्वामी जी ने रख लिया
  मट्टी का मान ।
स्वामी जी के आशीर्वाद से,
  मीर साहब ने भी पा लिया सम्मान,
"अजर अमर रहेगा तेरा राज"
  यह था स्वामी जी का वरदान।
महात्मा जी के शब्द ऐसे निकले
  जैसे पत्थर पर निशान,
फिरंगी भी कर न सके
  मीर साहिब को परेशान।
बल्कि कायम रही,
  खैरपुर मीरस की वही शान ।।

याद रहेगा इतिहास में, यह बरस सत्रह सौ सत्तासी.
  जब निर्माण हुआ एक चेतन महल,

जहाँ आते थे, प्यास बुझाते प्रेम प्यासी,
ऐसे अमृत आश्रम के नामाचार से,
आते थे चारो दिशाओं से निवासी।
नाम रस और भजन कीर्तन के
आने लगे कई विश्वासी,
मिल के लंगर में भंडारा
खाते थे सब नगर वासी।
राम नाम अमृत से प्यास बुझायके,
कट गई उनकी चौरासी।

स्वामी जी तीर्थ यात्रा से
जब आए वापसी,
तो नज़र फिरा के देखा,
तो यहीं था प्रयाग राज और काशी।
आत्मिक उन्नति पाय ली थी,
भाई सुखराम दास और सन्तरीन साधु उदासीन।
हर प्रेमी का हो रहा था,
सन्मान और आदर सत्कार,
कथा कीर्तन भजन गुरु वाणीं,
और अमृत वेले आसादीवार।
लंगर और भरपूर भंडारे की
रीति चल रही थी हर वार,

सुपुर्द कर दें सम्पूर्ण सेवा,
　　स्वामी जी के मन में आया यह विचार ।
क्यों न योगभ्यास का,
　　आत्म आनन्द पा लें इकबार ।
यह सोच के स्वामी जी,
　　ऐसे दिन का करने लगे इन्तजार ।
संख्या सत्संगियों की बढ़ने लगी,
　　आने लगे कई परिवार,
एक अकेले के लिये
　　था मुश्किल सम्भालना दरबार ।
इसलिये तीन गद्दियों का
　　करना होगा निर्माण,
स्वामी सुखदेव साहब का था
　　ऐसा यह फरमान ।
बाबा सुखराम दास, बाबा श्याम दास
　　करेंगे भजन कीर्तन और विद्या दान
बाबा सन्तरीन के सुपुर्द रहेगा,
　　भंडारा और महमानों का सम्मान ।

योग अभ्यास आनन्द के लिये,
　　स्वामी जी समाधि में बैठ गए
करके यह ऐलान,

सिक्ख सेवक श्रधालु,
दर्शन के लिये हो गए परेशान,
विनती निमाणी करके
बैठ गए कुटिया के द्वार पर
बनके दरबान ।
दर्शन दीजिये एक बार
कीजिये हमारी मुश्किल आसान ।
सुन के प्रेम पुकार,
उठ आए समाधि से संत महान ।

प्रसन्न चित्त स्वामी जी बोले,
चांद के दिन लगेगा मेला इस अस्थान !
जब साधु संत मिलेंगे यहाँ,
दर्शन करेंगे सिक्ख सेवक,
और कई मेहमान ।
इस तरह आरम्भ हो गया
चांद के दिन का मेला महान ।
ज्योति से तीन ज्योति जलीं,
महन्त बने परिपूर्ण,
करके कंठ वेद मन्तर,
तीनों संतो के कर्मयोग,
और भक्ति भाव में रहा न कोई अन्तर ।

इक दिन स्वामी जी ने
    निर्णय किया मन अन्दर,
अब इस संसार को त्यागने का
    आ गया है सुअवसर ।
उतार के चोला पुराना
    पहन लिये उन्होंने नए वस्त्र,
सन् १८२८ में, हो गए वे
    महा समाधि में लीन और अस्थिर ।
स्वामी सुखदेव साहब की अमर-भावना
    आज भी है अमर ।

सत्यवादी सुखराम दास,
    कर गए सच्चाई का प्रचार
संतोषी संतोखदास बता गए,
    संतोष का सार ।
और आरम्भ किया
    बैसाखी का मेला
करके यह विचार
    कि कई लोग आएंगे,
        मेले पर,
होगा अच्छा सा धर्म प्रचार ।
    संगत दास संगत के प्यारे,
    दे गए एक अनोखा सा प्यार ।

# बाबा किशन दास साहिब

अब आए बाबा किशनदास,
    निरमल निराले और गरीबों के सहार
जिन्होंने करा दिया सब कैदियों को आज़ाद
सुन के एक कैदी के माँ की पुकार ।

    इक दिन सेवाधारी नींद में रहे गल्तान,
बाबा जी नियमानुसार कुएँ पर
    आकर बैठ गए करने स्नान
तब रहट कुँआ की चल पड़ी आपेही,
    करके संतों का सम्मान ।

ढाई पहर अमृतवेले करते थे,
    भजन कीर्तन और आसादीवार ।
इक दिन संगत गहरी नींद में थी,
    कोई पहुँच न पाए दरबार,
बाबा जी के खंजरी के साथ,
    सुर न मिला रहे थे संगीतकार,
तब बाबा ने दिखाया संगीतकारों को,
    भरी हुई थी दरबार,

देव देवता कर रहे थे,
    कीर्तन का बेचैनी से इंतजार
ऐसे संत महान,
    कर गए रोशन हालाणीं दरबार ।।

# बाबा महरबक्श साहिब

महरबान महरबक्श का अनोखा सपना
हुआ साकार,
जिन्होंने उठा के तगाड़ियाँ,
दरबार साहिब को पक्का
और नया बनवाया।
हर मन्दिर में संगमरमर
और चित्रकला का सुन्दर काम करवाया,
दरबार साहिब के गुम्बद पर
सोने का कलश लगवाया।
सूरज की किरणों ने,
उन्हें दूर दूर तक चमकाया।
इस तरह दरबार साहिब को
बाबा जी ने अत्यन्त सुन्दर बनवाया।

दूर दूर से जो जन,
दरबार में प्रणाम करते आया
जो कोई सन्तान की आशा रख के दरबार में आया,
उन्होंने उस विश्वास से था सन्तान को पाया।
कई परिवारों ने इस दरबार से है पुत्र सन्तान पाया

बाबा महरबक्श के महर से भर के गोद गया
जो खाली गोद वहाँ आया ।

चित्रकार ने तस्वीर उतारने के लिये अर्ज़ किया,
किन्तु बाबा महरबक्श साहिब को मना न पाया,
और बाबा जी ने फरमाया,
यह सुन्दर मन्दिर में है,
संगत ने मेरी तस्वीर को पाया ।

# स्वामी स्वरूप दास साहिब

चार बरस की आयु का बालक
बाबा महरबक्श साहिब दरबार में लाया ।
मोहनि मूरति, साँवली सूरत ने था मोहन नाम पाया ।
रंग में रंग गया बालक मोहन,
जब दरबार साहिब में आया ।
तेज और प्रकाश चमकने लगा
जब वह जवानी में आया ।
ज्ञान ध्यान और तपस्या से,
जोगी ने था जोग कमाया ।
उन्नीस बरस की बाली उमर में,
राज गद्दी को उन्होंने पाया ।
स्वामी स्वरुप दास के नाम से
जग में प्रसिद्ध हुआ ।

गद्दी पर बैठते ही,
उन्होंने पाया रुप शिव भोला नाथ का ।
तपस्वी बने तेजस्वी पहन के
वस्त्र विभूति का ।
शिवरुप स्वरुपदास बना,
दरबार हालाणी कैलाश था ।

प्रसन्न जल्द हो जाते थे,
यह लक्षण था भोलानाथ का ।
भिक्षुक भिक्षा माँगने आता था,
झोली भरके जाता था ।

सवाली पहुँचे रख के मन में आस
अन्तर्यामी का उत्तर पहुँचे स्वयं उनके पास ।
आये जो दूर से द्वार पर खाली हाथ,
लौटे प्रसन्न चित्त, भर के खुशियाँ साथ ।

भटक भटक के आये इमाम बक्श किसान,
बाबा जी के पास,
महर करो महरवान, तो पूरी हो जाए मेरी ख्वाइश,
कुआँ खोदा तो निकला खारा पानी,
मुसाफिर कैसे बुझाएं प्यास
फिर कैसे पूरी होगी मेरी, पुत्र संतान की आस ?

स्वामी जी फरमाए,
"भर के लाओ इक कोरी मटकी
हमरे कुआँ से"
ढक के मटकी मलमल से,
बाबा ने वचन लिया ग्रन्थ साहब से
शब्द यों निकला "(भोजरी महला ५–(४९६).

'जस समरत सभ कलविख नास है,
पत्री होय उधारो, सो हर हर तम सदैह जाप है
जानका अंत न पारो, पूता माता की आसीस
निमख न विसरै तुम कह हर हर
सदा भजह जगदीस''
''इमामबक्श, अब तेरे कुआँ का पानी,
मीठा होगा मिल के इस मटकी के जल से,
जाके डाल इस मटकी को कुएँ में,
तो पूरन होए तुम्हारी आस उससे''
इस तरह खारा पानी मीठा हुआ
बाबा जी की कृपा से ।
और इमामबक्श पा गए मन की मुरादें
ऐसे विश्वास से ।

## बाबा हरिदास साहिब

कर्मयोगी कीरत नाम से
बहल्लाणीं में जनम ले आए,
संत स्वरूप दास जी उन्हें
दरबार साहिब में ले आए ।
भक्ति मार्ग पर चलने वाले ने

भक्त राम नाम पाए
कदावर और ताकतवर बने
जब जवानी में वो आए ।
सन्तों का था फरमान
भंडारे की सेवा उन्हें दी जाए ।

भंडारे की सेवा उन्होंने
बड़े प्रेम से निभाया ।
जहाँ भाई टेकाराम में
परम मित्र उन्होंने पाया ।
करके अटूट सेवा
बाबा किशनदास का प्यार पाया ।
जब बाबा किशनदास साहिब
ज्योति जोति समाया ।
भक्त राम को
उन्हीं की गद्दी का वारिस बनाया
बाबा हरिदास के नाम से
वो गद्दी पर आया

रंग में रंग गए शक्तिशाली
जब उनकी थी भरी जवानी ।
देश में फैली हुई महामारी की बीमारी
आ पहुँची हालाणी

तब संगत ने अर्ज़ रख के
की विनती निमाणी ।
संतोषित करते, बाबा जी ने फरमाया,
"चाहिये कोई महापुरुष की कुर्बानी ।"
संगत ने अर्ज रखा
"और कौन है यहाँ आप जैसा महापुरुष ज्ञानी"
इतना सुन के योगभ्यास से
हो गये अन्तरध्यान अन्तर्यामी
सह न सके भाई टेकाराम
और कर गए एक अनमोल कुर्बानी
यह बन गई
अमर प्रेम मित्रता की इक अमर कहानी
दोनो साथ साथ छोड़ चले
यह दुनिया फानी ।
महामारी बीमारी की इस तरह अन्त आई
ऐसे संत महान कर गए
अमर दरबार साहिब हालाणी

**स्वामी स्वरुपदास थे संत महान**
चोरों को भी उन्होंने बना दिया अच्छा इन्सान ।
जब इक रात चोर आए दरबार साहिब के अस्थान,
सब कमरों के द्वार की

बाहर से लगा दी कड़ियाँ,
फिर आए स्वामी स्वरुपदास जी के यहाँ।
पहले मार पीट की
फिर छीन ली हरिमंदिर की चाबियाँ।
करके दरबार साहिब की चोरी,
भर लीं उन्होंने झोलियाँ,
फ़िर भागने लगे छत के ऊपर से,
मार के कूदियाँ।
तब छत गिर के बन्द कर दिया चोरों को
जैसे बंदियाँ।
दयावान स्वामी जी ने छुड़ा दिया चोरों को
करके ऐसा बयान,
उनको ठहराया बेगुनाह, बोल के
उन्हें नहीं देखा कभी यहाँ,
छोड़ दीजिये उनके घर वाले होंगे परेशान,
हमें तो नहीं है उनकी कोई पहचान।
और फरमाये "दया धर्म का मूल है,
नरक मूल अभिमान।"
स्वामी जी को न कपड़ों की शान,
न मन का मान,
सादगी के सरताज,

थे स्वामी स्वरुप दास महान ।
देख के संजीदगी संतो की,
चोर रह गए हैरान,
पकड़ के पाँव बोले
हम पापी जीव गुनहगार
और बड़े नादान ।
आँसू बहाते चोरों ने कहा
ले लीजिये हमारी जान ।
बाबा जी ने आशीर्वाद देके फरमाया,
रहिये इस जहान में बन के
अच्छे इन्सान ।
वाह दयालु धर्मात्मा, बिना किसी भेद भाव
आप के लिये हैं सब समान ।
उस दिन से चोर बने श्रद्धालु
अन्य सेवकों के समान ।

इक दिन संत शिरोमणि ने किया इशारा,
कि अब इस जग से करना है किनारा ।
'उस खूंटी से तो उतार के दो चोला,
ओ भाई तारा (बहलाणी वाले सेठ तारा चंद)
हैरानी से सोचने लगे यह कैसा है इशारा.

अभी अभी तो बदले हैं उन्होंने कपड़े ।
स्वामी जी बोले, भाई जैसे यह चोला है बदला,
इसी तरह यह शरीर भी है बदलना ।
भाई तारा के आंसू छलकते देखके,
बाबा जी बोले हँसते,
"भाई तुम क्यों हो रोते,
जब जाने वाले हैं हँसते"
इक कम पच्चास बरस
राजगद्दी उन्होंने कमाई,
१६४० का आषाढ़ माह
जब सम्पूर्ण होने को आया
और चारों दिशाओं से संगत
दरबार साहिब में आई
तब बाबा स्वरुपदास साहिब
ज्योति ज्योत समाई ।

# बाबा माधवदास साहिब

अब बाबा माधवदास साहिब गद्दी पर आए,
संत दयावान दीन दुखियों के थे हमराहे ।
उन्होंने एक धर्माऊ अस्पताल इजाद में लाए,
स्वामी जी ने एक नई रीति को अपनाये ।

अगर है किसी को मिलने की चाहना,
तो दरबार में आए ।
संगत को ही है दरबार साहिब में आना,
हमें अब दरबार से न है बाहर जाना ।

ऐसे बहुत दिन बाद ऐसा एक दिन आया,
संदेशा पडईदन से लाए
दीवान हरिदास मल करनाणी
बड़ी नम्रता से करके विनती निमाणी,
चलना होगा स्वामी जी,
तरस रहे दीवान मानसिंह भंभाणी ।
वो निर्बल अस्वस्थ,
आ न सकते हालाणीं,
चल के दर्शन दीजिये,
आप तो जानते हैं अन्तर्यामी

इतना सुन के अधिक गम्भीर हो गए स्वामी,
    और हालाणीं से आ पहुँचे शहर पडईदन में।
जैसे मस्तक धरा मानसिंह ने,
    बाबा जी के गोद में,
प्राण पंछी छोड़ चला
    पिंजड़ा छिन्न पल में,
वड़भागी ऐसे सेवक
    जिन्होंने प्राण त्यागे,
        गुरुओं की गोद में।
करके सफल जीवन सफर, पहुँचे वो वैंकुठ धाम में।

हर बारह बरस सिद्ध नागे
    आते थे लेने बँधियाँ,
समाधियों के अस्थान पर
    देखा नागों ने दीवार बाँधा,
नागों ने पूछा स्वामी जी से,
    कहाँ रहें हम,
और कहाँ हाथी बाँधे।
    बाबा जी फरमाए
मेला क्षेत्र धर्मशाला में रहिये,
    और पीपल से हाथी बाँधें।

सिद्ध नांगों में था अभिमान, और बोले
आप न जानते हमरी सिद्धियाँ,
फिर नांगे क्रोधित होकर बोले,
तोड़ देंगे हम वो दीवार को,
स्वामी जी फरमाए "ऐसे न कीजिये,
न जगाइये हमरे नागों को।"

परन्तु नांगे जिद्द में आकर,
तोड़ना चाहा उस दीवार को,
अचानक काले नाग प्रकट हुए
और डस लिया दो नागों को।
इक तो पहुँच गए स्वर्गधाम को,
दूजे को ले जाया गया अस्पताल को,
अभिमान ही मारता है अभिमानी को।
देख कर विचित्र लीला
पीड़ा होने लगी नांगों को,
बाबा जी ने तो ग्रहण किया था
दया जैसे गुणों को
अन्दाज न था उदासीन शक्ति का नागों को।।

अब देश में जोर पकड़ा आज़ादी के आन्दोलन
महात्मा गाँधी ने किया एक अनोखा एलान,
आदेश दिया फिरंगियों को छोड़ जाओ हिन्दुस्तान।
इसलिये गिरफ्तार हो गये,
साबरमति के संत महान।

मच गया देश के हर कोने में
घोर घमसान ।
चलने लगी लाठियाँ,
और बरसने लगी गोलियाँ ।
इस वजह से होने लगा
अहिंसा का अपमान ।
फिरंगी न चाहते थे
यकमुस्ट रहे हिन्दुस्तान ।
चाल शतरंज की चल रहा था, वह शैतान ।
तब लड़ा दिया आपस में
हिन्दू और मुसलमान
शैतानों की शैतानी से
ईजाद हो गया पाकिस्तान ।

दरबार साहिब सुपर्द करके
कुछ सेवकों के हाथ,
स्वामी जी लिये
चन्द सिक्ख सेवक अपने साथ
आ पहुँचे अजमेर हिन्द में,
जहाँ होने लगा जुदाई का अहसास ।
सिक्ख सेवकों के फिक्र में
रहने लगे गमगीन दिन रात ।
उनकी उन्नति के लियें
दे दिया अपनी कमाई का साथ
हर समय हर दम

लगी रही उनके मन ही मन में
ऐसी फिकरात,
कैसे सुखी रहें
बस जाएं सिक्ख सेवक और हर जात ।
अब तो उनका दु:ख
स्वामी जी से देखा न जात ।
ऐसा सोचते स्वामी जी ने
मोल लिया अस्वास्थ्य ।

इक दिन बाबा जी फरमाये
दरबार साहिब के लिये हैं
इक बालक आए,
दीवान नानकराम के घर में
है वो जन्म ले आए ।
सवा तीन बरस की उमर में,
यह बालक दरबार साहिब में आए ।
उस बालक ने था
भाई साधुराम का नाम पाया ।
बाबा गोबिन्ददास थे उस समय गद्दी पर आए ।
उन से ध्यान ज्ञान और संगीत उसने प्राए
उनमें माता पिता और गुरु के प्यार को वो पाए ।

आया साल उन्नीस सौ तिरपन,
शरीर का कष्ट बढ़कर हुआ कठिन,
ऐसा कष्ट कैसे कोई कर सके सहन,
परन्तु स्वामी जी मन ही मन थे मगन ।

ओठों पर हर समय थी मुस्कान,
 इलाज के लिये आए बनकर बम्बई के महमान
इसलिये खरीद लिया इक छोटा सा मकान,
 रहने के लिये अच्छा लग रहा था,
 उपनगर सियान ।
हकीम ने तपास के किया फरमान,
 "समुद्र के पानी से करना होगा स्नान।"
सेवा में सेवाधारी भाई दयासिंह थे महान्।
अमृत वेले महीम खारी से,
 पैदल पानी भर लाते थे सियान।
चलते चलते जूते घस गए,
 पैरों में पड़ गए छाले ।
करके इशारा अपने जूते के लिये,
 स्वामी जी बोले "इस जूते को पहन ले"
उत्तर में भाई दयासिंह ने कहा
 "हम दासों के दास,
 खड़े हैं आपकी महर के लिये,
वड्भागी वो जो लायक समझे जाते,
 तुच्छ सेवा के लिये ।"
बोले स्वामी जी "भाई इतनी कंजूसी किस के लिये
 नई जूती जाके खरीद ले ।"
परन्तु भाई दयासिंह थे सेवक इक निराले

मन ही मन बोले
"क्या क्या करोगे नाश्वंत शरीर के लिये"
जिन्हें न मन का मान न था उनको तन की शान,
जिन सेविया तिन पाया मान।

अब सन्तों ने किया इशारा,
वैकुंठधाम जाने के लिये,
मुल्तानी मिट्टी और गंगा जल
कहा उन्होंने देने के लिये।
और शान्त हो गए थोड़ी देर के लिये,
फिर पूछा बड़े सन्तों की पुण्य तिथि के लिये,
संगत ने उत्तर दिया,
"वो है आज से तीसरे दिन।"
इस लिये स्थगित कर दिया तैयारी और कुछ दिन।
स्वामी जी ने मांग ली, ज़रुरी चीज़े
अष्टमी के छठवें दिन
सिक्ख सेवक आ गए थे
बड़ी संख्या में उस दिन।
बराबर पन्द्रह अगस्त को पूरा कर दिया सफर संसारी
मुख पर थी उनके गुरुओं की वाणी प्यारी प्यारी।
मौसम भी उस दिन हो गई अल्हदी और न्यारी।
इस तरह स्थापित हुआ यह स्थान पर गुरुओं की सवारी
और प्रसिद्ध हुआ स्थान दरबार साहिब हालाणी।
यह हुआ तीन मूर्ति की इक झलक सुहानी,

आदि और प्रथम है सिन्ध में दरबार साहिब हालाणीं,
आज भी कायम है सिन्ध पाकिस्तान में
यह दरबार शिरोमणि ।
जहाँ पल रहे हैं परिवार पन्द्रह
और करते हैं महमानी ।
लंगर भंडारा शब्द कीर्तन,
और करते हैं कंठ गुरुवाणीं ।
दूजा है राजस्थान अजमेर में,
दरबार साहिब हालाणीं ।
दरबारों में दरबार है शिरोमणि,
दरबार साहिब हालाणीं ।
तीसरी मूर्त है बम्बई स्यान में,
दरबार साहिब हालाणीं ।
अमर अस्थिर है और रहेगी
यह दरबार साहिब हालाणीं
यह शब्द क्या, परन्तु स्वामी
सुखदेव साहिब जी की है अमर वाणीं ।
अमर रहे, अमर रहे यह
दरबार साहिब हालाणीं,
आओ मिल कर गाएं यह स्वामी
सुखदेव साहिब जी की अमर वाणी ।



ज्योत से ज्योत जले
  गुरु ग्यान ध्यान के यहाँ भंडार मिले
मन स्थिर से मान मिले
  गुरु आज्ञा से ज्ञान फले
ऐसे अन्तःकरण उज्जवले
  इस मार्ग से ही हरि भक्ति मिले
ताते प्रभु की पहचान पाये
  दो सदियों से यह रीति है चली आए

# बाबा गोबिन्ददास साहिब

भाई दयासिंह गुरुओं के वचन से
    हुए बाबा गोबिन्ददास ।
आए वो आदि सिंहासन पर,
    बन के दासों का दास ।
"जिन सेविया तिन पाया मान",
    है उनका अटल विश्वास ।
इस सच्चाई का कराते हैं,
    हर कर्म से अहसास ।
है यह विश्वास,
    ले आए हैं अवतार गुरु अमरदास ।
इस युग में बन कर
    आए हैं बाबा गोबिन्द दास ।
अठ्ठारह सौ अस्सी में जन्म ले आए,
    गाडह गाँव टल्टी में,
    रखाय के दौलत नाम ।
ले आए साथ अनमोल दौलत,
        राम का नाम ।

घर वालों ने प्यार से,
    धर लिया उन पर दौलू का नाम ।
राम के नाम से जुड़ा रहा तेरा हर काम ।

बचपन में ही तुमने,
पी लिया, भगवत के नाम का जाम ।
जो सोया वो खोया, तेरे लिये ह्राम था आराम ।
रातें जग जग कर मन्छर झील पर,
सुनाते थे कायनात को, राम का नाम ।
अमृतवेले गाते चलते थे,
गली गली राम का नाम ।
अपन सुरीले आवाज़ में करते थे
इल्तजा हर मुबह शाम ।
जगाते चले जिज्ञासु, देके मालिक का
अनमोल पैगाम ।

दौलू से बने दौलू भगत,
करके तन मन धन अर्पण,
दया इतनी कि दान कर देते थे वस्त्र,
चाहे रहना पड़े नंगे बदन ।
जीव दया और उनकी जान के लिये,
गाते थे दिल सोज़ भजन ।
करके सत्याग्रह ले लेते थे,
लोगों से पक्का वचन ।
"न वापरेंगे मांस मदिरा,
महफिलों में, शादियों के दिन ।"

अब दौलू भगत से
    बने दयासिंह रागी,
बदल के नाम अपना
    बने वो इक वैरागी ।।
दिल उठ गया था दुनिया से,
    पहन के लिबास वैरागी,
यह परमेश्वर से थी,
    उन्होंने मिन्नत मांगी ।
और छोड़ कर घर परिवार
    बन चुके थे वो जोगी
परन्तु लोग कहते थे,
    घर छोड़ कर बना है वो बागी ।
उन्हें क्या लोग गिला से,
    जिनकी दिल हैं नाम स्मरण में लागी
नाम स्मरण से हो गए पागल,
    दयासिंह रागी ।

करते रटन रमतू योगी,
    पहुँचे हालाणीं धाम ।
स्वामी स्वरुपदास के चरणों में,
    मिला उनको विश्राम ।।
पाय के सेवा भंडारे की,
    पाया मित्र उन्होंने भाई रीझू राम ।

जिनके हाथ हरि सेवा में,
मन में स्मरण था राम का नाम ।

भाई नारायणदास ने था,
बाबा किशनदास का प्यार पाया,
जब बाबा जी ज्योति ज्योत समाया,
भाई नारायणदास ने
उनकी सेवा को अपनाया ।
अमृतवेले प्रकाश और आसादीवार
करके जोग कमाया ।
यह जोगी संसारी सफर
करके सफल जब अलविदा कर गया
तब स्वामी स्वरुपदास जी ने,
चंद सेवकों को बुलवाया
और फरमाया
"अब कौन है जो भाई नारायणदास,
की सेवा को अपनाये,"
सब सोच में रह गए,
कोई कुछ बोल न पाए ।
इक दिन की तो बात न थी,
रोज नियम जो सम्भाल पाए ।
वो ही ऐसी कठिन सेवा कर पाए,

भाई दयासिंह के नज़रों ने,
स्वामी जी को अहसास दिलाए,
और वो बोले "दयालु कुछ न है
मुश्किल, अगर स्वामी जी की
कृपा हो जाए"
स्वामी जी फरमाए "हम प्रसन्न होंगे खालसा
तुम यह सेवा अगर कर पाए।"
आज दिन तक बाबा जी
यह सेवा करते हैं आए।

अमृतवेले पहले पहल
एक चालीस पर नगाड़ा हैं बजाते।
साथ साथ एक सेवक
घंटा भी हैं बजाते।
इस तरह जिज्ञासु को अमृतवेले,
हैं बाबा जी जगाते।
करके अरदास चारों ग्रन्थों से
वचन वो लेते,
और चारों दिशाओं में
हर कोने पर खड़े
"राम, हरे हरे राम"
बड़े आवाज़ में वो बोलते।

ताकि सिक्ख सेवक और
सेवाधारी, अटूट नींद से जागते ।
फिर हर मंदिर से, चौके में,
हैं बाबा जी आते ।
पहले प्रसाद की देग चूल्हे पर चढ़ाते
बाद में सब लोगों के लिये हैं चाय बनाते ।
और चौके के दर पर,
"भाई चाय तैय्यार है"
खड़े आवाज़ वो बोलते
ऐसे एक एक होकर सब लोग जग जाते,
अगर जो कोई चाय के लिये
न पहुँच पाते,
तो बाबा जी कर्मण्डल में चाय लिये
उनके दर पर आते, और पूछते
"जाग रहे हो उठो उठो,
चाय पी के फिर सो जाते ।"
इस तरह अमृतवेले सब लोग
स्नान कर आते ।
पूरे चार बजे बाबाजी,
अपने मधुर आलाप से
कीर्तन हैं आरम्भ करते ।
और साढ़े सात बजे तक

आसादीवार समाप्त हो जाते ।
करके अरदास बाबाजी,
साध संगत में हैं परसाद बाँटते ।
फिर छोटे बच्चों को
अपने कमरे में हैं नाश्ता कराते ।
नव से साढ़े ग्यारह
सात ग्रन्थों से कथा कराते ।
बीच में भाई भुगड़ोमल सूरदास
दिल सोज़ भजनों से हैं दिल बहलाते ।
बारह बजे भंडारे में,
बाबा जी अपने हाथों से भोजन परसते ।
फिर संगत को आराम करने के लिये
आदेश हैं देते ।
चार से पाँच पुराणों से, कथा समय
बाबाजी प्रवचन करते ।
पाँच से साढ़े छः पत्रों के हैं उत्तर देते ।
सात बजे फिर से भंडारे की
सेवा में आ जाते ।
आठ से नौ भाई साहब साधूराम से
हैं कीर्तन कराते ।
साढ़े नौ बजे सबको दूध हैं पिलाते ।
और जल्दी सो जाने की, सबको है आज्ञा देते

स्वामी सुखदेव साहिब की
    यह दरबार है स्थापित की हुई ।
इस महान दरबार साहिब को
    आज दो सौ साल पूरे हुए ।
इस बरस बैसाखी के तीन दिन
    जशन आनन्द मय संपूर्ण हुए
बड़ी संख्या में संगत इस जशन में,
    शामिल हुए
अमृतवेले अजमेर की गलियों में,
    मधुर कीर्तन हुए ।
बाबाजी को जलूस में लेकर,
    नगरी की परिक्रमा कर आए ।
छोटे बड़े नाचते गाते,
    शहर की गलियों से चल कर आए ।
हर कोई और हर एक ने,
    बड़े प्रेम पूर्वक सेवा को अपनाए ।
मिल जुल कर सेवा धारियों ने,
    क्या तो सेवा में हाथ बटाए ।
महान व्यक्ति वही, जो
    खुशी खुशी हर सेवा कर पाए ।
यही हैं बाबाजी के शब्द,
    जो बार बार वो दुहराए,

इसीलिये बरस में दो बार,
    बाबाजी मुफ्त इलाज के पड़ाव डलवाएं।
जहाँ अधिक निपुण डाक्टरों को
    बाबाजी बुलवाएं ।
और सबका इलाज, किसी जात पात,
    या भेदभाव के हो जाए ।
गरीबों का दुःख दर्द बाबा जी से, देखा न जाए
अबलाओं के दिले दर्द, इजहार से,
    बाबाजी नयनों नीर बहाए ।

ऐसे संत हालाणी के, हमरे गुरु है
    जो सरताजों के सरताज हैं,
उन्हीं को हर पल याद कीजिये,
    और फिर सुख का अहसास कीजिये ।
हम सब लुटाय के आए हिन्द में,
    पकड़े ओट आसरा गुरुओं के चरणों में ।
जो कोई जैसी आशा रख के आया मन में,
    दया दृष्टि से
        कर दीं आशाएं पूरी उस पल में ।
वाह वाह दया के भंडार,
    तुम्हें बारम्बार है नमस्कार ।
हँसते हँसाते कर देते हैं बाते दो चार,

न भुला पाएंगें कभी, इन्हों का इतना प्यार ।
बड़ी गम्भीरता से सुनते हैं, सबके इज़हार
सांचा दिल से अगर जो कोई कर दे पुकार ।
तुरन्त सुन लेते
और ऐसे प्रेमियों के पहुँचते द्वार ।
और कराते है इक प्रिय शब्द का उच्चार
"देनहारु प्रभ छाडि कै,
लागहि आन सुआइ ।।
नानक कहू न सीझई,
बिनु नावै पति जाइ ।"
इस तरह कई उन्नति कर गए,
सौभाग्य परिवार ।
महर करके महरबान कर देते हैं,
मुश्किल आसान ।
सवाली न कोई लौटा खाली,
पाय के मन मुराद और वरदान ।
प्रवचन में हैं करते सूचित
"तू अपने आपको पहचान,
यह नाश्वत है शरीर और
मिथ्या है सारा जहान ।
कर कोई ऐसा कर्म,

ताकि मालिक के वहाँ,
पाए तू मान ।
सेवा जैसा करम न है कोई
न ऐसा कोई दान ।"
हर समय बाबा जी, फरमाते है,
"जिन सेविया तिन पाया मान,
बाबा जिन सेविया तिन पाया मान ।"

# बाबाजी के प्रिय भजन

मुँहिंजा मिठिड़ा राम शुकर अथई,
शुकर अथई बाबा शुकर अथई
मुँहिजा मिठिड़ा राम शुकर अथई

बाबा सुख जो ढींह गुजारियो अथई
बाबा सुख जी राति गुजारींदे

बाबा सुख जो वक्त गुजारियो अथई
बाबा सुख जो वक्त गुजारींदे

वरी अमृतवेले उथारींदे
पहिंजो मिठिड़ो नाम जपाई दे

मूँखे गोबिन्द गोद विहारींदे
मुँहिजा बिगिडियल कार्ज सवारींदे

बाबा सुख जो महिनो गुजारियो अथई
बाबा सुख जो महिनो गुजारींदे

बाबा सुख जो सालु गुज़ारियो अथई
बाबा सुख जो सालु गुजारींदे

मूँखे पूरण सतगुरु मिलायो अथई
मूँखे अन्त जे भीड़ खां बचाई दे

पहिंजनि चङनि कमनि में लगाई दे
पंहिजो भज्नु सदाई करोई दे

सत्संग में असाँ खे विहारियो अथई
अहंकार खां बाबा बचाई दे

बाबा जीअरें मरणु सेखारीदे
मुँखे जनम मरण खां छदाई दे

पहिंजे शरण असांखे पवाईं दे
पहिंजे भाणे ते राज़ी रहाईं दे

भउ सागरु पारि कराईं दे
पहिंजे जोति में जोति मिलाईं दे

मुंहिजा दुशिमन सजण बनाईंदे
मूखे पापीन खा तू छदाई दे

मूँखा सच्चु ई सच्चु चवाईं दे
मूँखे कूड़ कपट खा बचाईं दे

मूँ नीच निरगुण खे अपनायो अथई
पहिंजे चरणन जी धूर थी रहाईं दे

मूँखे खटते विहारे खारायो अथई
पहिंजे दासनि जी शेवा कराईं दे

मूँखे गादियुनि में चाढ़हे घुमायो अथई
बाबा पहिंजीअ हलंदीअ हलाई दे

बाबा धरम शरम सा रहाईं दे
बाबा लज ऐ पति सा निबाहींई दे

बाबा उथन्दे बिहन्दे जपाईदे
बाबा खाईन्दे पियन्दे जपाई दे

बाबा चौथे पद में लगाईदे
बाबा दहों दरवाज़ो खोलाई दे

मूँखे पापनि जी माफी बख्शींदे
बाबा जहिड़ी तहिड़ी कबूली दे

पहिंजे नाम सा चित खे जोड़ाईदे
पहिंजे सिफत में वित्तीं लगाई दे

बाबा सभ में पाणु पसाई दें
बाबा पाण में नेठि समाई दे

बाबा सुआसनि ते कब्ज़ो जमाई दे
मुहिंजे मन खे शान्त बणाई दें

बाबा डहियल बि तोई ठाहिया अथई
बाबा उजिडियल बि तू ई वसाई दे

बाबा दुखनि में सिमिरण करायो अथई
बाबा सुखनि में बि यादि कराई दे

बाबा गृहस्त जे सुख में रहायो अथई
बाबा पंजनी बिकारनि खाँ वचाई दे

बाबा मूँखे पहिंजो बणई दे
बाबा पाण खे मुँहिंजो बणई दे ।

(२)

१. दातार पहिंजो मिठिरो नालो चित्त में दींदो
चित्त में दींदो मन में दींदो

२. दातार आहे दानी दया जो सागर
सिरडो नवाए उन अगियाँ आसीस तूँ घुरु
दातार कम तुहिंजा रास करे छदींदो

३. दातार खां घुरु माफी पहिंजे गुनाहन जी
बढियूँ बकशाए घुरु माफी पहिंजे विकारनि जी
दातार दोह तुहिंजा माफु करे छदींदो

४. दातार साँ कर दोस्ती तूँ राम नाम जी
भक्ति कर भगवान गोबिन्द नाम जी
दातार तोखे पाणेही पाप दाँह छिकींदो ।।

१. दादारु पहिंजो मिठिरो नालो चित्त में दींदो
चित्त में दींदो-मन में दींदो

२. दातारु आहे दानी दया जो सागर
सिरड़ो नवाए उन अगियाँ आसीस तूँ घुरु
दातारु कम तुहिंजा रास करे छदींदो

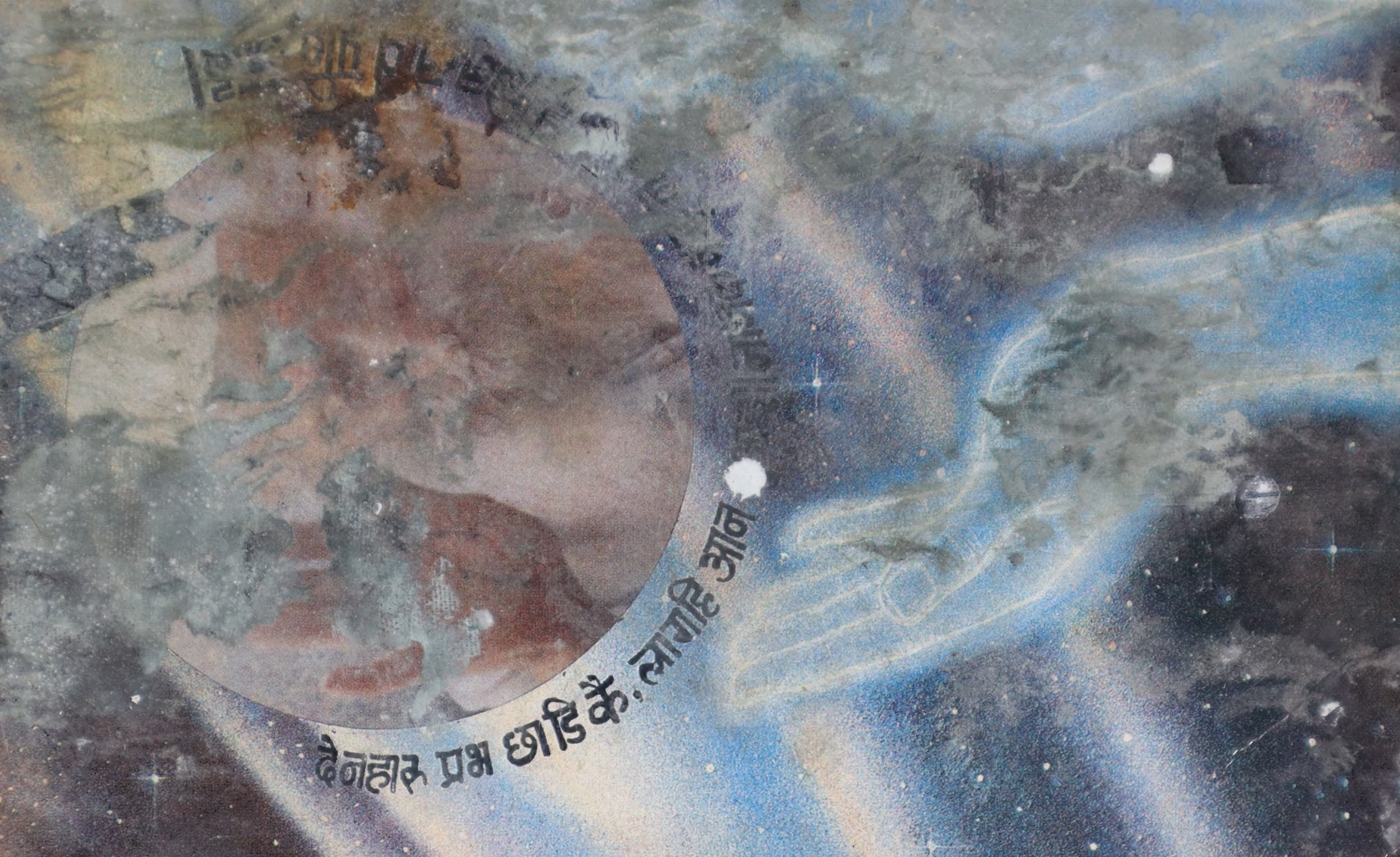
३. दातार खां घुरु माफी पंहिंजे गुनाहन जी
बदियूँ बक्शाए घुरु माफी पहिंजे विकारनि जी
दातारु दोह तुहिंजा माफु करे छदींदो

४. दातार साँ कर दोस्ती तूँ राम नाम जी
भक्ती कर भगवान गोबिन्द नाम जी
दातारु तोखे पाणेही पाण दाँह छिकींदो

न कब जाना न सीखा हिन्दी,
न कब हमने लिखा हिन्दी
परन्तु गुरु आज्ञा से लिख गया यह हिन्दी,
ताकि इस युग के जान पायें सिंधी
कैसी सभ्यता और संस्कृति है सिंधी।

रचनाकार–नवल आसुदोमल करनाणी
बान्दरा, मुंबई ४०० ०५०




देनहारु प्रभ छाडि कै, लागहि आन